राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता के बिना हमारी आजादी अधूरी

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

सालासर. साहित्य अकादेमी नई दिल्ली और मरूदेश संस्थान सुजानगढ़ द्वारा निजी भवन में आजादी के बाद का राजस्थानी साहित्य पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि मूर्धन्य रचनाकार डॉ. अर्जुन देव चारण ने कहा कि राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता के बिना हमारी आजादी अधूरी है। डॉ.चारण ने कहा कि अंग्रेजों की सत्ता ने भारत की देशज भाषाओं को खत्म करके अपनी भाषा अंग्रेजी इस देश पर थोपी है। राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता बिना हमारी आजादी अधूरी है। डॉ. अर्जुनदेव चारण ने ग्रीक व स्पेनिश भाषा के माध्यम से औपनिवेशिक आधिपत्य के इतिहास का उल्लेख करते हुए स्वभाषा के जनमानस की आवश्यकता को रेखांकित किया। अध्यक्षता रायसिंहनगर के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ मंगत बादल ने की। डॉ. बादल ने कहा कि शब्दों की साधना अदभुत होती है। शब्द की ताकत होती है। विशिष्ट अतिथि लक्ष्मीनारायण पुजारी ने प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा राजस्थानी भाषा नहीं शामिल होने पर चिंता व्यक्त की। संगोष्ठी के प्रारम्भ में स्वागत वक्तव्य देते अकादेमी के सचिव डॉ. के.श्रीनिवास राव ने कहा कि साहित्य संस्कृति का संरक्षक है । उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वह लोक साहित्य की अनमोल धरोहर को सुरक्षित रखने के लिए अपनी सकारात्मक भूमिका निभाएं। उद्घाटन सत्र में मरूदेश संस्थान के अध्यक्ष डॉ घनश्याम नाथ कच्छावा ने आभार जताया। संचालन हरीश बी शर्मा ने किया। संस्थान के सचिव कमल नयन तोषनीवाल, संरक्षक भंवर सिंह सामौर, प्रोफेसर हीरालाल गोदारा, ज्योतिकृष्ण वर्मा, लेखाकार अमित कुमार, मानसिंह सामौर, कुबेर पारीक, पूनाराम बिस्नोई, रामचंद्र आर्य, किरण बादल, डॉ.शर्मिला सोनी, जीवन कुमावत, पूनमचंद सारस्वत आदि ने अतिथियों का स्वागत किया।